ब्रह्मर्षि भृगु-भार्या पुलोमा

ब्रह्मर्षि भृगु ब्रह्मा के मानस पुत्रों में अन्यतम थे। ब्रह्मा के त्वक (त्वचा) से भृगु ऋषि का आविर्भाव हुआ है। यह भी प्रचलित है कि ब्रह्मा के चिन्मय वीर्य से ही भृगु ऋषि का जन्म हुआ। चिन्मय वीर्य का अग्निज्वाला स्वरूप – 'भृग्'; भृग् से ही भृगु उत्पन्न हुए। इन्हीं ब्रह्मर्षि भृगु की स्त्री पुलोमा थीं। वे धर्मशील एवं अपूर्व सुन्दरी थीं। एकदिन धर्मप्रधान महर्षि भृगु अपनी गर्भवती स्त्री पुलोमा को घर में छोड़कर नदी में स्नान करने गए। तभी वहाँ 'पुलोमा' नामक राक्षस उपस्थित हुआ। यह राक्षस बहुत पहले से ही पुलोमा के रूप-लावण्य पर मुग्ध था एवं पुलोमा से विवाह करने को इच्छुक था। किन्तु, पुलोमा के पिता उसके इस आग्रह से सहमत नहीं थे एवं उन्होंने महर्षि भृगु को अपनी कन्या का सम्प्रदान किया। उपयुक्त समय पाकर राक्षस ने महर्षि भृगु के कुटी में पदार्पण किया तब भृगु पत्नी ने वन्य फल-मूलादि से आगन्तुक अतिथि का स्वागत किया। उस पापात्मा राक्षस ने वहाँ अपनी पूर्वपाणिप्रार्थी सुमधुर-हासिनी पुलोमा का अनिन्द्य मनोहारिणी रूप देखकर उसको हरण करने की अभिलाषा से महर्षि भृगु की कुटी में प्रज्ज्वलित यज्ञाग्नि से प्रश्न किया, ''पुलोमा प्रकृत रूप से किसकी स्त्री है? यदि उसकी पूर्व प्रार्थित रमणी भृगु की पत्नी हो तब वह आश्रम से पुलोमा का अपहरण करेगा, क्योंकि उसकी उपेक्षा कर पुलोमा के पिता ने भृगु को अपनी कन्या को सौंप दिया था।'' अग्नि को निरुत्तर देख बार-बार वह एक ही प्रश्न करता रहा। तत्पश्चात् अग्नि को संबोधित करते हुए राक्षस ने कहा, ''हे हूतवह! तुम सर्वदा सभी जीवों के अन्तर में पाप-पुण्य के साक्षी स्वरूप अवस्थित हो, इसीलिए मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम निष्पक्षता से बोलो, पुलोमा मेरी पत्नी है या नहीं? तुमसे सत्य जानकर तुम्हें साक्षी रखकर ही मैं पुलोमा का हरण करूँगा।'' अग्नि ने, एक पक्ष में मिथ्या कथन व अन्य पक्ष में भृगु श्राप, इस उभय संकट में पड़कर, मृदु स्वर से कहा–''हे दानव तनय! तुमने मन ही मन में उसका वरण किया था परन्तु यथाविधि तुम्हारा विवाह नहीं हुआ। महातपस्वी भृगु ने वेदविधि पूर्वक मेरे समक्ष इनका पाणिग्रहण किया था। तुमने इनका पूर्व में वरण किया था, इस विचार मत से ये तुम्हारी पत्नी हो सकती है। मैं झूठ नहीं बोल सकती, क्योंकि मिथ्यावादी का सर्वत्र अनादर होता है।'' – अग्नि के इस वाक्य को श्रवण कर राक्षस ने वराह रूप धारण करके भृगु स्त्री का अपहरण करते हुए वायु वेग से पलायन किया। उस संकट के समय, पुलोमा का गर्भस्थ शिशु मातृगर्भ से च्युत हुआ एवं इसी से उनका नाम हुया 'च्यवन'। उस देदीप्यमान भास्कर सदृश शिशु पर राक्षस की दृष्टि पड़ते ही, शिशु के तेज से वह भस्म हो गया। उसके उपरांत, पुलोमा नवजात पुत्र च्यवन को गोद में लेकर रोदन करते हुए स्वगृह की ओर अग्रसर हुई। उनके नयनों से निर्गत अश्रुधारा एक महानदी के रूप में प्रवाहित हुई, वह नदी उसी का अनुसरण करने लगी। पितामह ब्रह्मा ने उस नदी को 'बधुसरा' नाम से अभिहित किया एवं उन्होंने विविध प्रबोध वाक्यों से पुत्रवधु को सान्त्वना दी। महर्षि भृगु ने स्नान-पूजादि समापन कर अपने गृह की ओर प्रस्थान किया, पत्नी व पुत्र की ऐसी अवस्था देख वे क्रोधान्ध हो उठे। सब घटना सुनने के बाद; अग्नि ने उस दुरात्मा राक्षस के सम्मुख पुलोमा का जो परिचय दिया इसी कारणवश भृगु ने अग्नि को सर्वभक्षी होने का अभिशाप प्रदान किया। इस पर अग्निदेव ने क्रुद्ध होकर अग्निहोत्रादि यज्ञाग्नि में स्वयं को तिरोहित किया; अतः ऋषिगण अग्नि के अन्तर्ध्यान होने से विमूढ़ होकर ब्रह्मा के शरणापन्न हुए। तब ब्रह्मा अग्नि को आश्वासन देते हुए बोले,''तुम सर्व लोकों में सर्वदा पवित्र एवं सर्व जीवों की गति स्वरूप हो। तुम्हारी शिखा से दग्ध सम्पूर्ण वस्तुऐं शुद्ध होंगी। तुम सर्व शरीर में सर्वभक्षी नहीं होओगी। अपान देश में तुम्हारी जो सभी शिखाऐं हैं केवल वही सर्व वस्तुओं का भक्षण करेगी।'' सर्व लोक पितामह ब्रह्मा के इस कथन को सुनकर संतुष्ट होकर अग्नि स्वकर्म में सक्रिय हुई।

महाभारत, पुराण, पौराणिका इत्यादि से संग्रहित

हिन्दी अनुवाद – मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख